लोभवश भटकते मन को रोकें...

संतुष्टता हमारे अनेक व्यर्थ संकल्पों को शांत कर देती है। एक योगयुक्त आत्मा का प्रमुख गुण है जो उसके जीवन से, व्यवहार से, चेहरे से, बोल-चाल से दिखायी देगा, संतुष्टता। योगी अगर संतुष्ट नहीं है तो उसका मन अवश्य भटकेगा। कई सन्यासियों की बातें भी हम सुना करते थे। बहुत पैसा भी लोग उन पर चढ़ाते थे, लेकिन वो झोपड़ी में ही रहे। पैसा जो भी आता था, भंडारा करा देते थे। उनको कुछ नहीं चाहिए। वही प्रसिद्ध हुए, वो ही दूसरों का कल्याण कर सके। जिसके मन में इच्छाओं का उबाल आता रहा है ये चाहिए, ये चाहिए...। जिसकी इच्छायें कभी शांत ही नहीं होती। कभी खान-पान की इच्छा, कभी पहनने की इच्छा, कभी इलेक्ट्रोनिक साधनों की इच्छा, सुंदर घर में रहने की इच्छा, प्लेन से यात्रा करने की इच्छा। इच्छाओं के तो सौ प्रकार हैं। इच्छाओं का फैलाव मन को कमज़ोर कर देता है। जो मनुष्य संतुष्ट नहीं है वो लोभी हो जाता है। कहावत आप ने सुनी होगी। "लोभी नर कंगाल है, दुःख पावत दुःख लेत"। दुःख देता भी है, दुःख लेता भी है और वो कंगाल ही है सचमुच। कईयों के पास बहुत पैसे हैं लेकिन रहते ऐसे जैसे कंगाल, पेंट भी फटी हुई पहनेंगे। वैसे आजकल तो फटी हुई पेंट पहनना फैशन हो गया है, लेकिन कई बड़े लोग भी जो समझदार हैं वो आधुनिकता के चक्रव्यूह में नहीं उलझते। कपड़े पुराने-सुराने पहने रहेंगे। घर में भी साफ-सफाई नहीं करने देंगे, नौकरानी नहीं रखने देंगे। लोभी रहते हैं, पैसा बचाओ, पैसा बचाओ। इससे कोई फायदा नहीं होता।

मनुष्य क्यों कमाता है? परिवार को, स्वयं को सुखी रखने के लिए, तो हमें लोभ के वश नहीं होना है। देखिये, एक है इच्छायें, दूसरी होती हैं आवश्यकतायें। आवश्यकतायें तो जो हैं वो हैं। अभी आपको कोई बीमारी हो गई तो आपको दवाई की आवश्यकता है। ठंडी बढ़ गई आपको गर्म कपड़ों की आवश्यकता है। बहुत गर्मी हो गई आपको पंखे की, ए.सी. की आवश्यकता है। वो तो आवश्यकतायें हैं, उनको तो पूर्ण करना ही होगा लेकिन कुछ मनुष्य कहीं भी तृप्त नहीं होते हैं। ये चीज़ मिल गई, दूसरे के पास देख लिया, उसके पास अच्छी है उससे अच्छी लूँगा, कपड़े अच्छे पहनने हैं, ज्वेलरी बहुत अच्छी है। दूसरों को वैसी पहने देख लिया तो सोचेंगे कि ये तो मजा नहीं आया, इससे अच्छी होनी चाहिए मेरे पास, मन भटकेगा। ऐसा न भी हो तो इक्छा करने का प्लान बनायेंगे। ऐसे लोग दूसरों को धोखा भी बहुत देते हैं। गलत तरीकों से धन कमाते रहते हैं, वो भी एक चोरी है। व्यर्थ संकल्पों का तूफान मन में रहता है। वो अपने मन को एकाग्र करना चाहें तो नहीं कर सकते हैं, अनेक विद्यार्थी हमने देखें हैं। भिन्न-भिन्न कारणों से उनके मन की गति बहुत तेज़ हो जाती है तो चित्त शांत नहीं होता। एकाग्रता नहीं होती है। पढ़ाई-लिखाई भारी लगती है। टेंशन पैदा करती है।

मुझे तो भगवान से ही सब कुछ लेना है। मुझे तो स्वर्ग की राजाई चाहिए, इससे कम कुछ नहीं चाहिए। मैं तो नर से श्री नारायण, नारी से श्री लक्ष्मी ही बनूँगी। चाहे मुझे कितनी भी तपस्या करनी पड़े। इस तरह के सुंदर विचार मन को नयी दिशा देंगे।

इसलिए आज सभी अपने मन में संकल्प करें कि जब हम भगवान के बच्चे बन गये, उससे हमें सब कुछ मिल रहा है तो क्यों न हम उससे सब कुछ लें? सांसारिक इच्छायें, ये संसार की छोटी-मोटी प्राप्तियाँ, ये कई युगों से हमारे साथ रही हैं। सतयुग में तो क्या-क्या होगा हमारे पास, इतना ज़्यादा होगा जो कोई इच्छायें ही नहीं होंगी। हम इतने सम्पन्न और भरपूर होंगे। तो क्यों न हम उस स्थिति की ओर चलें,लोभ पर ध्यान दें। ऐसा तो नहीं बहुत कुछ होते भी हमारा लोभ समाप्त नहीं होता है! आत्मा संतुष्ट हो ही नहीं रही है! संतुष्टता तो बहुत सुंदर चीज़ है भगवान के शब्दों में, संतुष्टता बहुत बड़ी प्रोपर्टी है और प्रसन्नता तुम्हारी पर्सनैलिटी है। जो व्यक्ति लोभी है वो तो चक्रव्यूह में घूमता ही रहता है।

केवल जो भगवान के बच्चे बन गये, जिन्होंने ईश्वरीय प्राप्तियों के बाद अपने चित्त को शांत और संतुष्ट कर लिया वे इस लोभ से मुक्त होकर अपने को शांत कर सकते हैं। तो चेक करेंगे भगवान को पाने के बाद भी हम इस संसार से और क्या पाना चाहते हैं। जबकि वो स्वर्ग की राजाई हमारे लिये लेकर आया है। जबकि वो हाईएस्ट स्टेटस देने आ गया है तो हम उसे छोड़कर किसके पीछे भाग रहे हैं? जो तृष्णायें हैं, जहाँ से आत्मा तृप्त होगी ही नहीं, जो व्यर्थ संकल्पों को जन्म दे रही हैं। अपने स्वमान को बढ़ायें- मैं भरपूर आत्मा हूँ, सम्पन्न हूँ। मैं तो दाता हूँ, देने वाली हूँ, इष्ट देव-देवी हूँ, मेरा दर्शन करके ही अनेकों की मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं। मुझे माँगने का हाथ तो फैलाना ही नहीं है। मुझे अपने मन से इच्छाओं को कम करना है। एक लक्ष्य बना लें।

मुझे तो भगवान से ही सब कुछ लेना है। मुझे तो स्वर्ग की राजाई चाहिए, इससे कम कुछ नहीं चाहिए। मैं तो नर से श्री नारायण, नारी से श्री लक्ष्मी ही बनूँगी। चाहे मुझे कितनी भी तपस्या करनी पड़े। इस तरह के सुंदर विचार मन को नयी दिशा देंगे। उमंग-उत्साह देंगे, व्यर्थ से मुक्त रखेंगे। फिर धीरे-धीरे आप छह मास में अनेक इच्छाओं की गुलामी से मुक्त हो जायेंगे।

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महाशिवरात्रि महोत्सव के अंतर्गत विधानसभा मार्ग स्थित शांति सरोवर परिसर में आयोजित आठ दिवसीय मेले का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए अपर कलेक्टर उज्जवल पोरवाल, संस्थान की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी तथा ब्र.कु. सविता दीदी। इस मेले का मुख्य आकर्षण तीन सौ फीट लम्बी गुफा के अंदर द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन के साथ-साथ होलोग्राम शो रहा।

सुजानगढ़-राज.। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में 'एक शाम प्रभु के नाम' संगीत संध्या 'संगीत के द्वारा आध्यात्मिक क्रांति लाएगी विश्व शांति' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें परमात्मा शिव का संदेश देने हेतु आयोजित कलश यात्रा को गोपालपुरा सरपंच सविता राठी ने हरी झंडी दिखाकर तिरुपति बालाजी मंदिर से रवाना किया। इस अवसर पर आयोजित संगीत संध्या में सभापति नीलोफर गौरी, सरपंच सविता राठी, बाबूलाल कुलदीप, ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर भाई,मा.आबू, हास्य कलाकार मुरारी लाल पारीक, बॉलीवुड गायक सुखीराम मंडा, रुचि खंडेलवाल, लोडसर की शारदा प्रजापत व अन्य कलाकारों सहित ब्र.कु. विनती बहन, ब्र.कु. सुप्रभा बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. मिनति बहन व अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

ग्वालियर-माधौगंज(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु उपहार भवन में 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजीव गुप्ता,मुख्य अभियंता,ग्वालियर संभाग,एम.पी.ई.बी, आशीष प्रताप सिंह,प्रदेश कार्य समिति सदस्य भा.ज.पा., विनीता गुप्ता,प्रिंसिपल शासकीय विद्यालय, लश्कर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.आदर्श दीदी, ब्र.कु.ज्योति बहन, ब्र.कु.डॉ. गुरुचरण भाई तथा ब्र.कु. प्रहलाद भाई।

नवी मुम्बई-सीबीडी बेलापुर। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. गणेश धूमाळ,मेडिकल ऑफिसर कोकन भवन, दीवानजी पवार,समाजसेवक,सिटी एंड इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन, एडवोकेट गणेश अखाडे, ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. मीरा दीदी तथा अन्य।

मालीया हाटीना-गुज.। महाशिवरात्रि महोत्सव के अंतर्गत 'शिव अवतरण से स्वर्णिम भारत की ओर' कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण करते हुए भगवान करगठिया,एमएलए, दिलीप सिसोदिया,तालुका पंचायत प्रमुख, राजेश भालोडिया, तालुका भाजपा प्रमुख, जितु सिसोदिया,सरपंच, आभा मल्होत्रा,मेडिकल ऑफिसर, ब्र.कु. मीता बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. रूपा बहन,केशोद सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य।

इंदौर-प्रेम नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के अनुभूति भवन में 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर 'विश्व सद्भावना का पर्व महाशिवरात्रि' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए सुरजीत सिंह टुटेजा,मोटिवेशनल स्पीकर,प्रतिनिधि प्रताप नगर गुरूद्वारा, डॉ.अनिल शिवानी,एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर,देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, पियस लाकरा,फादर,डायरेक्टर,सेंटर फॉर इंटर रिलीजियस हारमनी, ब्र.कु. शशि दीदी,संचालिका,प्रेमनगर इंदौर पश्चिम क्षेत्र, ब्र.कु.यशवनी दीदी, संचालिका,बिजलपुर सेवाकेन्द्र, ब्र.कु.शारदा दीदी,सेवाकेन्द्र संचालिका,बैराठी कॉलोनी तथा अन्य।

बसना-छ.ग.। 87वीं शिव जयंती के पावन पर्व पर शिव ध्वजारोहण कर प्रतिज्ञा ली गई। साथ ही शिव मंदिर के समक्ष आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें ब्र.कु.भुवनेश्वरी बहन, ब्र.कु.पूनम बहन तथा अन्य भाई-बहनें शामिल हुए।

खरगोन-म.प्र.। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर शिव ध्वजारोहण करने के पश्चात् प्रतिज्ञा कराते हुए राजयोगिनी ब्र.कु.किरण दीदी, पूर्व विधायक बाबूलाल महाजन, उद्योगपति नरेन्द्र गांधी, वार्ड पार्षद श्वेता महाजन, दंत चिकित्सक डॉ.पालीवाल, ब्र.कु. प्रभाकर तथा अन्य।

रीवा-देव तालाब(म.प्र.)। विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.लता बहन।